Dr. Vandana [illegible]
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

B.A Part — II (Hons)
Paper — III
नीतिशास्त्र (Ethics)

1 नैतिकता का मापदंड:

Notes / बाह्यनियम का मापदंड" (External law as moral standard)

GRB BOOKS

नैतिक निर्णय के लिए किसी मापदंड का रहना (आवश्यक है)। मापदंड के अनुकूल रहने पर नैतिक काम को उचित या शुभ कहते हैं तथा प्रतिकूल रहने पर अनुचित या अशुभ कहते हैं। राज्य, समाज तथा ईश्वर के नियम बाह्य-नियम (external laws) कहे जाते हैं। आचारशास्त्रियों के अनुसार ये नियम भी नैतिक मापदंड के रूप में कार्य करते हैं। इनको अनुकूल कर्म शुभ या उचित माने जाते हैं तथा इनका उल्लंघन करनेवाले कर्म अशुभ या अनुचित कहे जाते हैं। नैतिक मापदंड के रूप में बाह्यनियमवाद (External law as the standard of Morality)

इस सिद्धान्त के अनुसार बाह्यनियम अथवा किसी बाह्यसत्ता द्वारा निर्धारित नियम नैतिकता का मापदंड है। जब कोई बाह्य सत्ता (जैसे ईश्वर, समाज या राज्य) अपनी इच्छाओं या आज्ञाओं द्वारा हमपर आदर्शों की व्यवस्था आरोपित करती है तो इसे बाह्यनियम कहते हैं। बाह्य सत्ता की इच्छा या आज्ञा किसी दूसरी सत्ता पर आश्रित नहीं है, इसीलिए इसके आदेशों का पालन अनिवार्य माना गया है। ये आदेश हमें भाषणों द्वारा लिखित

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

काम से या पुरस्कारों द्वारा
होते हैं। प्राप्त्य के नियम किसी
जो राज्य के निर्देश सामाजिक तथा
प्रचलित परंपराओं के रूप में
प्राप्त होते हैं।

ये मापदंड हैं। बाह्यनियम की नैतिकता यदि हमारे आचरण इन नियमों से संगति रखते हैं तो वे उचित या शुभ कहे जाते हैं, और यदि आचरण की संगति बाह्य नियमों से नहीं बैठती तो उन्हें अनुचित या अशुभ की संज्ञा दी जाती है।

इन बाह्य नियमों का पालन दंडभय के कारण होता है। इन नियमों के पालन से पुरस्कार मिलता है और इनके उल्लंघन पर दंड। इसप्रकार पुरस्कार का लोभ या दंडभय ही व्यक्तियों से इन नियमों का पालन करवाते हैं।

बाह्यनियमवाद के अनुसार कोई कर्म स्वयं उचित या अनुचित नहीं होता। इसका औचित्य या अनौचित्य बाह्यनियमों के साथ क्रमशः संगत या असंगत होने पर निर्भर है। बाह्य सत्ता के आदेशों पर ही इनका नैतिक मूल्यांकन निर्भर है। इसप्रकार गुण जैसे शुभ - अशुभ, उचित अनुचित आदि वस्तुनिष्ठ नहीं हैं। ये गुण कर्म में नहीं हैं बल्कि किसी बाह्य सत्ता के आदेश पर निर्भर हैं।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes /

अब प्रश्न है किस बाह्य शक्ति के आदेशों को नैतिक मापदंड माना जाए? इस प्रश्न पर विद्वानों में मतभेद है। कुछ लोग राज्य के आदेश को, कुछ लोग समाज के आदेश को, तो कुछ अन्य लोग ईश्वर के आदेशों को ही नैतिक मापदंड मान लेते हैं। इस प्रकार राजकीय नियम, सामाजिक नियम और ईश्वरीय नियम नैतिक मापदंड का रूप ले लेते हैं।

बाह्य नियमवाद की आलोचनाएँ —

(a) बाह्य नियमवाद के अनुसार हम कर्म अपनी स्वेच्छा या संकल्प से नहीं करते बल्कि बाह्य-प्रलोभन या भय के दबाव में आकर करते हैं। इस प्रकार दबाव में आकर किए गए कर्म नैतिकता की सीमा का अतिक्रमण करते हैं। यहाँ संकल्प स्वातंत्र्य का अंत हो जाता है। यहाँ 'करना पड़ेगा' का भाव छिपा रहता है। 'करना पड़ेगा' का नैतिक दृष्टिकोण से कोई मूल्य नहीं है। नैतिकता में हमें 'चाहिए' से मतलब रहता है, न कि 'करना पड़ेगा' से। बाह्य नियमों द्वारा निर्धारित कर्मों को "चातुर्य, स्वाभाविकता तथा कार्यपटुता" के नाम से अभिहित कर सकते हैं नैतिकता के नाम से नहीं।

(b) बाह्य नियम 'चाहिए' (ought) के स्थान पर

गम्स पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

'करना पड़ेगा' (Must) का अतिक्रमण करता है। यहाँ कर्ता की स्वतंत्रता के आधार पर जब कर्म करने की छूट ही नहीं, भय से किए गए कार्य से नैतिकता का प्रश्न नहीं पाया जा सकता। बाहर से थोपा गया कर्म कभी नैतिक नहीं कहा जा सकता। केवल ऐच्छिक कर्म (Voluntary actions) ही नैतिक निर्णय के विषय हैं। बाह्यनियमवाद व्यक्ति की इच्छा या शुभ संकल्प या अभिप्राय के लिए नैतिकता में कोई स्थान नहीं छोड़ता।

(c) इस सिद्धांत के अनुसार नैतिक मापदंड निरंकुश तथा मनमाना कहा जा सकता है। बाह्यसत्ता के आदेशों से किसी कर्म को उचित या अनुचित घोषित करते हैं। समाज, राज्य या ईश्वर के आदेश ही नैतिकता का मापदंड प्रस्तुत करते हैं। यहाँ व्यक्ति की बौद्धिकता, उसके तर्क-बुद्धि आदि का कोई महत्व नहीं है। इसप्रकार बाह्य शक्ति के मनमाने एवं निरंकुश आदेशों को नैतिकता का मापदंड बनाना कभी नैतिक नहीं कहा जा सकता।

(d) नियम सदैव किसी साध्य (end) की प्राप्ति के साधन (Means) रहते हैं। नियम अपने-आप में साध्य नहीं कहे जा सकते। किंतु बाह्यनियमवाद बाह्य नियमों को ही साध्य मान लेते हैं। इन्हीं नियमों को

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

आदर्श मानकर हमारे नैतिक कर्मों का मूल्यांकन होता है। वास्तव में इन नियमों को किसी परम आदर्श की प्राप्ति का साधन मानना चाहिए। नियमों को आदर्श या साध्य मानना भारी भूल है।

(e) बाह्य नियमवाद नैतिकता में कठोरता का भाव उत्पन्न कर देता है। इसके अनुसार हमें बिना किसी अपवाद के बाह्य नियमों का कठोरता से पालन करना पड़ता है। कठोरता का अंकुश आने से नैतिकता का महत्व कम हो जाता है।

(f) बाह्य नियमवाद सीमित नैतिकता को प्रस्तुत करता है। बाह्य नियम नैतिकता की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकते। इनका प्रयोग नैतिकता के कुछ ही क्षेत्रों तक सीमित है। नैतिकता का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक एवं जटिल है। बाह्य नियम इसकी सभी समस्याओं को हल नहीं कर सकते।

(g) कभी-कभी बाह्य नियम परस्पर विरोधी (Self-Contradictory) हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में नियम विशेष को नैतिक मापदंड मानने में कठिनाई हो जाती है।

अतः बाह्य नियमवाद नैतिकता का संतोषप्रद मापदंड नहीं कर पाता।

पास-बुक

AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS